

प्रकाशनार्थ

15 जून, 2022 गोरखपुर।

आजादी के अमृत महोत्सव के अन्तर्गत गोरखनाथ मन्दिर के दिग्विजयनाथ स्मृति भवन में अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर आयोजित साप्ताहिक योग शिविर एवं शैक्षिक कार्यशाला के उद्घाटन सत्र से साप्ताहिक कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ।

इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में आयुष विश्वविद्यालय गोरखपुर के कुलपति प्रो० ए के सिंह, मुख्य अतिथि गोरखनाथ मंदिर के प्रधान पुजारी योगी कमलनाथ, विशिष्ट अतिथि गुरु गोरक्षनाथ योग संस्थान के योग प्रशिक्षक योगी सोमनाथ तथा कार्यक्रम अध्यक्ष महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के अध्यक्ष प्रो. यू पी सिंह रहे।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्य वक्ता प्रो. ए.के. सिंह ने कहा कि गोरखनाथ मन्दिर की भूमि यहां पर आने वाले व्यक्ति को सकारात्मक ऊर्जा का संचार करती है। आज यह पीठ इस साप्ताहिक कार्यक्रम के माध्यम से न केवल योग की शिक्षा प्रदान कर रही है अपितु योग प्रशिक्षुओं में सकारात्मक उर्जा का संचार भी कर रही है। आज संपूर्ण विश्व योग दिवस को बड़े ही मनोयोग से मना रहा है। हमारे प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री जी की इच्छा है कि प्रदेश के प्राथमिक स्तर से ही सभी विद्यालयों में छात्रों को योग की शिक्षा दी जाए जिससे हमारी आने वाली पीढ़ी निरोग हो सके। उन्होंने कहा कि व्यायाम करने से शरीर बलवान् हो सकता है किंतु स्वस्थ होना निश्चित नहीं है, जबकि योग को अपनाने से न केवल शरीर नहीं अपितु मन भी स्वस्थ रहता है। योग को अपनाना अपने जीवन को सुखमय बनाने के लिए परम आवश्यक है। हमारा माननीय मुख्यमंत्री जी से आग्रह है की योग शिक्षा को प्राथमिक स्तर पर अनिवार्य शिक्षा बनाएं।

अध्यक्षता कर रहे प्रो. यू पी सिंह जी ने कहा कि साप्ताहिक योग शिविर में न केवल योग के क्रियात्मक अपितु सैद्धान्तिक पक्ष का भी अभ्यास कराया जाता है। मनुष्य के शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा इन चारों को स्वस्थ और सुखी बनाने के लिए योग ही ऐसा संसाधन है जिसके माध्यम से शरीर स्वस्थ होता है, मन संस्कारित होता है, बुद्धि प्रखर होती है तथा आत्मा जागृत होती है। योग का अर्थ जोड़ना होता है योग के माध्यम से हमारे जीवन के प्रत्येक पक्ष में वृद्धि होती है और हम अपने जीवन के परम लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। हमें परम तत्व को प्राप्त करना सीमित इंद्रियों रूपी साधन से संभव नहीं है, यदि हमें परम सत्य का ज्ञान करना है तो बुद्धि के ऊपर छलांग लगाना होगा और वह योग से ही संभव है। योग के सिद्धान्त पक्ष से ऊपर व्यवहारिक पक्ष जो इस पीठ के द्वारा प्रचारित व प्रसारित हो रहा है वह परम तत्व के ज्ञान में सहायक होता है। अल्बर्ट आइंस्टीन का उद्धरण देते हुए उन्होंने बताया की आइंस्टीन कहता है कि विज्ञान से कभी भी शांति चाहते हो तो संभव नहीं है वह केवल भारतीय योग विज्ञान से ही संभव है।

द्वितीय सैद्धान्तिक सत्र में मुद्रा एवं बन्ध विषय पर उद्बोधन देने के लिए मुख्य वक्ता के रूप में योगाचार्य डॉ॰ जयन्त नाथ जी ने कहा कि चार प्रकार के बन्ध व विभिन्न प्रकार की मुद्राओं के द्वारा अपने जीवन को निरोगी व सुखमय बनाया जा सकता है।